No. of Printed Pages : 5

एम.आर.पी.-003

रेडियो प्रसारण में स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम
(पी.जी.डी.आर.पी.)

00275

सत्रांत परीक्षा

दिसम्बर, 2012

एम.आर.पी.-003 : रेडियो लेखन

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के **अंक समान** हैं।*

1. अनौपचारिक शिक्षा व दूर-शिक्षा में रेडियो की भूमिका पर प्रकाश डालें। 20

अथवा

रेडियो प्रसारणों के बदलते दायरों की चर्चा करते हुए राष्ट्रीय प्रसारण प्राथमिक केन्द्र एवम् स्थानीय केन्द्रों पर प्रकाश डालें।

2. रेडियों सामाचारों की आधार-भूत विशेषताओं की चर्चा कीजिए। 20

अथवा

निम्न के लिए रेडियो विज्ञापन लिखिए।

(क) शराब पीकर गाड़ी न चलाने के परामर्श हेतु।

(ख) एक नई मोबाइल सर्विस कम्पनी के लिए।

3. रेडियो पर प्रसारित होने वाले बाल-कार्यक्रमों की प्रस्तुति में किन-किन बातों का ध्यान रखा जाना चाहिए। 20

अथवा

ग्रामीण श्रोताओं के लिए 6-7 मिनट का एक रेडियो रूपक तैयार करें। उसको एक शर्षिक भी दें।

4. कहानी के रेडियो रूपान्तरण की समस्याओं और समाधान पर चर्चा करें। 20

अथवा

नीचे मशहूर रुसी लेखक निकोलाई गोगोल की कहानी का एक अंश दिया गया है। इसके आधार पर 5 मिनट के रेडियो नाटक की एक स्क्रिप्ट तैयार कीजिए।

"नहीं, यह ठीक नहीं हो सकता: यह तो बिल्कुल घिस गया है!"

ये शब्द सुनते ही अकाकी अकाकियेविच का दिल बैठ गया।

" लेकिन क्यों नहीं हो सकता, प्रेत्रोविच ?" उसने बिल्कुल बच्चों की सी आवाज़ में गिड़गिड़ाकर कहा। "मेरा मतलब है कि यह तो बस कंधों पर थोड़ा घिस गया है, और तुम्हारे पास कपड़े के किसी तरह के टुकड़े तो होंगे ही..."

''मेरे पास कपड़े के टुकड़े तो हैं, उनकी कोई कमी नहीं है,'' पेत्रोविच ने कहा। ''लेकिन मैं उन्हें इसके ऊपर टांक नहीं सकता-यह तो बिल्कुल गल गया है, सुई लगाते ही बस तार-तार हो जायेगा।''

''जब तार-तार हो जाये तो उसी वक़्त ऊपर से सीधे पैवंद लगा देना।''

''लेकिन कुछ हो भी तो जिसपर पैवंद लगाया जाये, कुछ है ही नहीं जिसपर पैवंद टिक सके ; पहन-पहनकर बिल्कुल झीना तो कर दिया है। अब तो इसे कपड़ा भी मुश्किल से ही कहा जा सकता है : इसे तेज़ हवा में लेकर चलो तो टुकड़े-टुकड़े होकर झड़ जायेगा।''

''मगर किसी तरह टांक दो। यह कैसे हो सकता है, कि सचमुच ... एक तरह से!''

''नहीं.'' पेत्रोविच ने अंतिम निर्णय के स्वर में कहा। ''अब इसका कुछ हो ही नहीं सकता। इसके दिन पूरे हो चुके। बेहतर यह होगा कि जब कड़ाके का जाड़ा पड़ने लगे तब इसे काटकर पाँव पर लपेटने की पट्टियाँ बना लीजियेगा, क्योंकि मोज़ों से पाँव गरम नहीं रहते हैं। इनकी ईजाद तो जर्मनों ने लोगों से पैसा ऐंठने के लिये की थी,'' (पेत्रोविच जर्मनों पर चोट करने का कोई मौक़ा नहीं चूकता था) ; ''और लगता तो यही है कि आपको नया कोट बनवाना पड़ेगा।

''नया'' शब्द सुनते ही अकाकी अकाकियेविच को चक्कर आ गया और कमरे की सारी चीज़ों उसकी आंखों के सामने घूमने लगीं। बस एक चीज़ जो उसे थोड़ी बहुत साफ़ दिखायी दे रही थी वह थी पेत्रोविच की नसवार की डिबिया पर बनी हुई जरनैल की तसवीर जिसके चेहरे पर काग़ज़ चिपका हुआ था।

''नया बनवाने से क्या मतलब तुम्हारा?'' उसने इस तरह पूछा जैसे पूरी तरह होश में न हो, ''मेरे पास तो उसके लिये पैसा नहीं है।''

''हाँ, नया,'' पेत्रोविच ने असह्य भावशून्यता से कहा।

''अच्छा, अगर मुझे नया सिलवाना ही पड़े, तो उसमें एक तरह से कितना, तुम जानो ... ''

''आपका मतलब है, कितना पैसा लगेगा?''

''हाँ।''

''मैं समझता हूँ डेढ़ सौ से ऊपर तो लग ही जाना चाहिए,'' पेत्रोविच ने बड़े अर्थपूर्ण ढंग से अपने होंठों को भींचकर कहा।

उसे बात में घातक प्रभाव पैदा करने का बेहद शौक़ था, उसे ऐसी बात कहना बहुत अच्छा लगता था कि सुनकर आदमी स्तब्ध रह जाये और तब वह कनखियों से उसके चेहरे पर अपने शब्दों का करिश्मा देखे।

''एक कोट के डेढ़ सौ रूबल!'' बेचारे अकाकी अकाकियेविच ने तड़पकर कहा : अपने जीवन में शायद पहली बार वह ऊँची आवाज़ में बोला था, क्योंकि वह स्वभाव से ही बेहद नरमी से बोलनेवाला आदमी था।

''जी हाँ,'' पेत्रोविच बोला, ''कोट में तो इससे भी बहुत ज़्यादा लग सकता है। उसमें चितराले का समूर और रेशमी अस्तरवाला कनटोप लगवा लीजिये तो क़ीमत दो सौ के पार पहुँच जायेगी।।''

''बस-बस, पेत्रोविच,'' अकाकी अकाकियेविच ने गिड़-गिड़ाकर कहा और अपने कान पेत्रोविच के शब्दों और उनके तमाम प्रभावों की ओर से बंद कर लिये। ''किसी न किसी तरह इसी को ठीक कर दो, कर दोगे न, ताकि कम से कम कुछ दिन तो और चल जाये।''

''क्या फ़ायदा : इसमें मेहनत भी बेकार जायेगी और पैसा भी,'' पेत्रोविच ने कहा, और उसकी यह बात सुनकर अकाकी अकाकियेविच वहाँ से चला आया ; उसका दिल टूट गया था।

अपने ग्राहक के चले जाने के बाद पेत्रोविच बड़ी देर तक निश्चल खड़ा रहा, उसने अपने होंठों को बड़े अर्थपूर्ण ढंग से भींचा और अपने काम को बड़ी देर तक हाथ नहीं लगाया ; वह इस बात पर बेहद खुश था कि उसने न अपने साथ विश्वासघात किया था और न दर्ज़ी की कला के साथ।

5. निम्न में से ***किन्हीं*** 2 पर चर्चा कीजिए। **10x2=20**

(क) सामुदायिक रेडियो

(ख) समाचार के स्रोत

(ग) जन सेवा सूचनाएं

(घ) युववाणी कार्यक्रम